॥ श्री जगन्नाथजी प्रसन्नोस्तु ॥
॥ जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥

प्रातः - संध्या आरती एवं स्तुति

श्री जगन्नाथजी मंदिर, अहमदाबाद

महामंडलेश्वर
महंतश्री नरसिंहदासजी महाराज

महामंडलेश्वर
महंतश्री सेवादासजी महाराज

महामंडलेश्वर
महंतश्री रामहर्षदासजी महाराज

महामंडलेश्वर
महंतश्री रामेश्वरदासजी महाराज

श्री जगन्नाथजी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हर
भक्त जनो के संकट, क्षण में दूर करे ॐ....

जो ध्यावे फल फल पावे, दुःख बिन से मन का
सुख संपति घर आवे, कष्ट मिटै तन का ॐ....

मात पिता तुम मेरे, शरण परु मैं किसकी
तुम बिन और न दूजा आश करु मैं किसकी ॐ....

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॐ....

तुम करणा के सागर, तुम पालन कर्ता
मै मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॐ....

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति
किस बिधि मिलू, गोसाई तुमको मैं कुमति ॐ....

दीन बंधु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॐ....

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॐ....

तन, मन, धन सब कुछ, है तेरा स्वामी सब कुछ है तेरा
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा प्रभु क्या लागे मेरा ॐ....

भगवान श्री रामचन्द्रजी की प्रातः स्तुति

भय प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रुप निहारी ॥

लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन बनमाला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी ॥

कह दुई कर जोरी स्तुति तोरी केहि विधि करहु अनन्ता ।
माया गुण ग्यानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥

करुणा सुख सागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रगट भये श्री कन्ता ॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुस्काना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कही कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रुपा ।
कीजै शिशुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनुपा ॥

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुप भूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं तेन परहिं भव कूपा ॥

दोहा

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गोपार

जय घोष

सियावर रामचन्द्र की जय, पवनसुत हनुमान की जय
उमापति महादेव की जय, रमापित रामचन्द्र की जय,
वृन्दावन कृष्ण बलदेव की जय, जगन्नाथ भगवान की जय

श्री जनकी जी की प्रातः काल की स्तुति

भई प्रगट कुमारी भूमि बिदारी, जन हितकारी भयहारी ।
अतुलित छवि भारी मुनि मन हारि, जनक दुलारी सुकुमारी ॥
सुन्दर सिंहासन तेहि पर आसन, कोटि हुतासन द्युतिकारी ।
सिर छत्र बिराजै सखि गन भ्राजै, निज-निज कारज करधारी ॥
सुर सिद्ध सुजाना हनहिं निशाना, चढ़े बिमाना समुदाई ।
वर्षहि बहु फूला मंगल मूला, अनुकूला सिय गुन गाई ॥
देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े, सुख बाढ़े उर अधिकाई ।
स्तुति मुनि करहिं आनन्द भरहिं, पायन परहिं हर्षाई ॥
ऋषि नारद आये नाम सुनाये, सुनि सुख पाये नृप ज्ञानी ।
सीता अस नामा पूरण कामा, सब सुख धामा गुण खानी ॥
सिय सन मुनि राई विनय सुनाई, समय सुहाई मृदुवानी ।
लालन तनु लीजै चरित सुकीजै, यह सुख दीजै नृप रानी ॥
सुनि मुनि बर बानी सिय मुसुकानी, लीला ठानी सुखदाई ।
सोवत जनु जागी रोवन लागी, नृप बड़ भागी उर लाई ॥
दम्पति अनुरागेउ प्रेम सु पागेउ, यह सुख लागेउ मनसाई ।
स्तुति सिव केरी प्रेम लतेरी, बरनि सुचेरी सिर नाई ॥

दोहा

निज इच्छा मख भूमि ते, प्रगट भई सिय आय ।
चरित किये पान परम, वर धन मोद निकाय ॥

भगवान श्री कृष्ण जी की प्रातः स्तुति

भय प्रगट गोपाला परम दयाला, यशोमति के हितकारी ।
हरषित महतारी रुप निहारी, मोहन मदन मुरारी ॥

कंसासुर जाना मन अनुमाना पूतना वेगि पठाई ।
तेहि हर्षित धाई मन मुसुकाई, गई जहाँ यदुराई ॥

तेहि जाई उठाये हृदय लगाये, पयधर मुख में दीन्हा ।
तब कृष्ण कन्हाई मन मुस्काई, प्राण तासु हर लीन्हा ॥

जब इन्द्र रिसाये मेघ पठाए, बस करि ताहि मुरारी ।
गौवन हितकारी सुर मुनि हारी, नख पर गिरिवर धारी ॥

कंसासुर मारो अति अहंकारो, वच्छासुर संहारो ।
बकासुर आयो बहुत डरायो, ताको बदन बिदारो ॥

तेहि अति दीन जानी प्रभु, चक्रपाणि ताहि दीन्ह निजलोका ।
ब्रह्मा शिव आये अति सुखपाये, मगन भये गये शोका ॥

यह छंद अनुपा है रस रूपा, जो नर याको गावे ।
तेहि सम नहि कोई त्रिभुवन सोई, मन वांछित फल पावै ॥

दोहा

नंद यशोदा तप कियो, मोहन सौं मन लाय ।
देखन चाहत बाल सुख, रहे कछुक दिन छाय ॥

श्री रामाष्टक

श्री अवधपुरी निज धाम कहिये, निकट सरयु श्री गंग है।
दशरथ नंदन असुर भंजन सियाराम जी, पूरण ब्रह्म है
-राधव राम जी पूरण ब्रह्म है ॥

सहित सीता भ्रात लक्ष्मन, धनुषधारी सीताराम जी है।
चित्रकूट तप लोक कहिये, सियाराम जी पूरण ब्रह्म है
-राधव राम जी पूरण ब्रह्म है ॥

भाल तिलक विशाल लोचन, आनंदकारी सीताराम जी है।
सावंली सूरति मोहनी मूरति, सियाराम जी पूरण ब्रह्म है
-राधव राम जी पूरण ब्रह्म है ॥

लंकापुरी छिन माहीं जारेउऊ, आज्ञाकारी श्री हनुमान जी है।
रावण मारी विभीषण स्थाप्यो, सियाराम जी पूरण ब्रह्म है
-राधव राम जी पूरण ब्रह्म है ॥

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता, भक्ति मुक्ति बरदायक।
ज्ञान-योग स्वरुप सुन्दर, सियाराम जी पूरण ब्रह्म है
-राधव राम जी पूरण ब्रह्म है ॥

ब्रह्मा शेष महेश नारद, कोटि अठासी ऋषि मुनि देवता।
इन्द्रादिक सनकादिक ध्यावे, सियाराम जी पूरण ब्रह्म है
-राधव राम जी पूरण ब्रह्म है ॥

अनंत कला युग चार प्रगटे, सप्त द्विप नव खंड है।
आदि अंत मध्य खोजि देखो, सियाराम जी पूरण ब्रह्म है
-राधव राम जी पूरण ब्रह्म है ॥

श्री रामजी अष्टक पठति निशिदिन, रामजी धाम सिधावहिं।
श्री गुरु रामनंद अवतार, अद्भुत सियाराम जी पूरण ब्रह्म है
-राधव राम जी पूरण ब्रह्म है ॥

श्री कृष्णाष्टक

श्री नंद नंदन जगत वंदन चरण रज कुवजा तरी ।
युग चारि पूरण ब्रह्म कहिये, श्री कृष्ण राजत मधुपुरी
-श्री गोपाल राजत मधुपुरी ।

बंशी वट तट निकट यमुना सांवरो मुरली धरी ।
मुरली की धुन सुन त्रिलोक मोहे, श्री कृष्ण राजत मधुपुरी
-श्री गोपाल राजत मधुपुरी ।

मुकुट लट पट पीत पट रस खोरर चंदन की बनी ।
श्री बनवारी लाल गोपाल कहिये, श्री कृष्ण राजत मधुपुरी
-श्री गोपाल राजत मधुपुरी ।

रास रमनीक शेष शंकर रटत है छिन छिन धड़ी ।
इन्द्र चन्द्र कुबेर ब्रह्म, श्री कृष्ण राजत मधुपुरी
-श्री गोपाल राजत मधुपुरी ।

वृंदावन में मदन मोहन अष्टसिद्धि नव निधि भरी ।
काली नाग घनश्याम नाथ्यो, श्री कृष्ण राजत मधुपुरी
-श्री गोपाल राजत मधुपुरी ।

गोप गोपी संग लीन्हे कुंजवन क्रीड़ा करी ।
रास राच्यो वसुदेव नंदन, श्री कृष्ण राजत मधुपुरी
-श्री गोपाल राजत मधुपुरी ।

कंस वंश विध्वंश मोहन बृज वधु पावन करी ।
उग्रसेन को राज दीन्हों, श्री कृष्ण राजत मधुपुरी
-श्री गोपाल राजत मधुपुरी ।

श्री कृष्ण अष्टक पठत् निशदिन गौलोक स गच्छति ।
भव रोग काटे, श्री कृष्ण राजत मधुपुरी
-श्री गोपाल राजत मधुपुरी ।

"जे नक्षत्र मोहन भये, सो नक्षत्र परयो आय ।
चारी बधाई रीति सब, करति योशोदा माय ॥"

जय घोष

राधे-कृष्ण की जय, सियावर रामचन्द्र की जय,
पवनसुत हनुमान की जय
उमापति महादेव की जय, अयोध्या रामलला की जय

भगवान श्री रामन्द्र जी की संध्या स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम् ।
नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ॥

कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील निरज सुंदरम् ।
पट पीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुता वरम् ॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभुषणम् ।
आजानुभुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम् ॥

भज दीनबंधु दिनेश दानव दलन दुष्ट दैत्य वंश निकंदम् ।
रघुनंद आनंद कंद कौशल चंद दशरथ नंदनम् ॥

इति वदति तुलसीदास, शंकर शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज-निवास कुरु, कामादि खल-दल गंजनम् ॥

श्री महारानी जानकी जी की सांयकाल की स्तुति

जय जनक नंदनी जगत वंदिनि जन आनंदनी श्री जानकी ।
रघुबीर नयन चकोर चंदनि वल्लभा प्रिय प्राण की ॥
तव कंज पद मकरन्द सेवित योगि जनमन अलि किये ।
करि पान गिनत न आन हिय निर्वान सुख आदंन हिय ॥
सुख खानि मंगल जानि जन जिय जानि शरण जो जातु हैं ।
तब नाथ सब सुख साथ करि तेहि हाथ रीझि विकातु हैं ॥
ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निजमुख भाषहिं ।
तव कृपा नयन कटाक्ष चितवनि दिवस निशि अभिलाषहि ॥
तनु पाइ तुमहि बिहाइ जड़ मति आन देवहिं सेवहिं ।
हत भाग सुर तरु त्याग करि अनुराग रेड़हिं सेवहि ॥
यह आस रघुबरदास की सुख राशि पूरण कीजिए ।
निज चरण कमल सनेह जनक विदेहजा वर दीजिए ॥
महाराज करि करुणा बिलोकहुं देहुं यह वर मांगऊँ ।
जेहि योनि जन्महुं, कर्म बस तेहि राम पद अनुरागऊँ ॥
मन जाहि राचेउ मिलहि सो बरु सहज सुंदर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
यहि भांति गौरि असीस सुनि, सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानीहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

:: सोरठा ::

जानि गौरि अनुकल, सियहिय हर्ष न जात कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ॥

:: स्तुति दोहा ::

मो सम दीन न दीनहित, तुम समान रघुवीर ।
अस बिचारी रघुवंशमणि हरहु विषम भवभीर ॥

कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहुं मोहि राम ॥
प्रनतपाल रघुवंशमनि करुना सिन्धु खरारि ।
गये शरण प्रभु राखिहै सब अपराध बिसारि ॥
श्रवन सुयश सुनि आयउ प्रभु भंजन भवभीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन शरण सुखद रघुवीर ॥
अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहउं निरवान ।
जन्म जन्म रति राम पद यह वरदान न आन ॥
बार बार वर मांगउं हरषि देहु श्री रंग ।
पद सरोज अन पायनी भगति सदा सतसंग ॥
बरनि उमापति रामजी गुन हरषि गये कैलास ।
तब प्रभु कपिन दिवाए सब विधि सुखप्रद वास ॥
एक मंद मै मोगबस कुटिल हृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीन बंधु भगवान ॥
बिनती करि मुनि नाय सिर कह कर जोरि बहोरि ।
चरण सोररुह नाथ जनि कबहुं तजे मति मोरि ॥
नहिं विद्या नहिं बाहु बल नहिं खरचन को दाम ।
मोसे पतित अपंग को तुम पत राखो राम ॥
एक छत्र एक मुकुट मनि सब वर्णन पर जोऊ ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोऊ ॥
कोटि कल्प काशी बसै मथुरा कल्प हजार ।
एक निमिष सरयू बसै तुलै न तुलसीदास ॥
रामजी नगरिया रामकी बसै सरयू के तीर ।
अचल राज महाराज की चौकी हनुमत वीर ॥
कहा कहौं छबि आपकी भले बिराजो नाथ ।
तुलसी मस्तक तब नमै धनुष बान लियो हाथ ॥
कित मुरली कित चंद्रिका कित गोपियन के साथ ।
अपने जन के कारने श्री कृष्ण भये रघुनाथ ॥
अवध धाम धामादि पति अवतारन पति राम ।
सकल सिद्धि पति जानकी दासन पति हनुमान ॥

कर गहि धनुष चढायउ चकित भए सब भूप ।
मगन भई श्री जानकी देख राम छबि रुप ॥
राम बाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर ।
ध्यान सकल कल्यान मय सुप तरु तुलसी तोर ॥
नील सरोरुह नील मनि नील नीर धन श्याम ।
लाजहिं तन शोभा निरखि कोटि-कोटि सत काम ॥
चलो सखी वहां जाइए जहां बसै बृज राज ।
गोरस बेचत हरि मिलै एक पंथ दो काज ॥
बृज चौरासी कोस में चार धाम निज धाम ।
वृन्दावन अरु मधुपुरी बरसाने नंद ग्राम ॥
वृन्दावन सौं बन नहिं नंदग्राम सौं ग्राम ।
बंशी बट सौं बट नहिं, श्री रामकृष्ण सौं नाम ॥
वृन्दावन की जेल में मुक्ति कहै बीलखाय ।
मुक्ति कहे गोपाल से मेरो मुक्ति बताय ॥
पड़े रहो यह जेल में साधु संत चली जाय ।
उड़ी उड़ी रज मस्तक पड़े सहज मुक्ति हो जाय ॥
तुलसी बिरवा बाग में सींचे से कुम्भलाय ।
राम भरोसे जो रहे पर्वत पर हरीयाय ॥
राधे राधे रटत है आक ढाक अरु खैर ।
तुलसी यह बृज भूमि में कहां राम से बैर ॥
राधे तुम बड़ भागिनी कौन तपस्या कीन्ह ।
तीन लोक तारन तरन सो तोरे आधीन ॥
आपनि दारुन दीनता कहउं सबहि सिरु नाय ।
बिन देखे रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाय ॥
कोटिन तीरथ कामना कोटिन रास बिलास ।
रजधानी रघुनाथ की जस गावैं तुलसी दास ॥
श्री गुरु मूरत मुख चन्द्रमां सेवक नयन चकोर ।
अष्ट पहर निरखत रहौं श्री गुरु चरन की ओर ॥
अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारन रहित दयाल ।
तुलसीदास सठ तेहि भजु छांडि कपट जंजाल ॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आध ।
तुलसी संगत साधु की हरै कोटि अपराध ॥

(धनु) (प्रदक्षिणा करता)

जय सीताराम सीताराम सीतारम जय सीयावरराम.....
जय राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम जय श्यामा श्याम.....
जय जय रघुपति राघव राजाराम पतितपावन सीताराम.....
जय जय रघुनंदन जय सीयाराम जानकी वल्लभ सीताराम.....
जय कौसल्या के प्यारे राम, दशरथराज दुलारे राम.....
जय राम हरे सीताराम हरे, जय जय प्रभु दीनदयाल हरे.....
गोविंद हरे गोपाल हरे, जय जय प्रभु दीनदयाल हरे.....
जगन्नाथ हरे बलराम हरे, जय जय प्रभु कृपा निधान हरे.....
जगदीश हरे, जगन्नाथ हरे, जय जय प्रभु दीनदयाल हरे.....
जय श्रीराम जय राम जय जय राम, जय जय विघ्न हरण हनुमान.....
जय जय सीयाराम जय जय हनुमान, संकट मोचन कृपा निधान.....
जय गौरी शंकर सीताराम श्री गुरु रामानंद भगवान.....
जय गौरी शंकर शालीग्राम श्री गुरु रामानंद भगवान.....
जय सीताराम सीताराम भज प्यारे मन सीताराम.....
जय राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम जय श्यामा श्याम.....
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीयावर राम.....

जय घोष
जगन्नाथ भगवान की जय
सुभद्रा बहन की जय
बड़े भैया बलदेव जी की जय
सियावर रामचंद्र की जय
अयोध्या रामलला की जय
पवनसुत हनुमान की जय
उमापति महादेव की जय
वृन्दावन कृष्ण-बलदेव की जय
बोलो भाई सब संतन की जय
अपने अपने माता-पिता गुरु गोविंद की जय
संध्या - सुमिरन आरती - स्तुति की जय जय सीताराम.....

:: वंदना ::

नीलाम्बुजश्यामल कोमलांगम्, सीता समारो पित वाम भागम् ।
पाणौ महासायक चारु चापम्, नमामि रामम् रघुवंस नाथम् ॥

भवाब्धिपोतम् भरताग्रजंतम्, भक्तप्रियम् भानु कुल प्रदीपम् ।
भूतत्रिनाथम् भुवनाधिपत्यम्, भजामि रामम् भव रोग वैद्यम् ॥

लोकाभिरामं रण रंगधीरं, राजीव नेत्रं रघुवंश नाथम् ।
करुण्यरुपं करुणा करंतम्, श्री रामचन्द्रम् शरणं प्रपद्ये ॥

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे ! कृष्ण हे ! यादव हे ! सखेति ।
अजानता महिमाऽनन्त वेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ॥

लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वन्दे विष्णु भव भय हरणम् सर्व लोकैकनाथम् ॥

अच्युतम् केशवम् रामनारायणम् कृष्ण दामोदरम् वासुदेवं हरिम् ।
श्री धरम् माधवम् गोपिका वल्लभम् जानकी नायकम् श्री रामचन्द्रम् भजे ॥

श्री जगन्नाथ अष्टकम्

कदाचित् कालिन्दीतट-विपिन-संगीत करवो,
मुदा-भीरी-नारी-वदन कमलास्वाद-मधुपः ।
रमाशंभुब्रह्माऽमरपतिगणेशार्चितपदो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ १॥

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे,
दुकुलं नेत्रान्ते सहचर कटाक्षं-विदधते ।
सदा श्रीमद् वृंदावन वसति लीला-परिचयो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ २॥

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे,
वसन प्रासादन्तः सहज बलभद्रेण वलिना ।
सुभद्रा मध्यस्थः सकलसुरसेवाऽवसरदो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ३॥

कृपापारावारः सजलजलदश्रेणी रुचिरो,
रमावाणीरामः स्फुरदमलपद्मो रुहमुखैः ।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखा गीत चरितो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ४॥

रथारुढो गच्छन् पथिमिलित भुदेव पटलैः,
स्तुतिः प्रादुर्भावं प्रतिपद मुपाकर्ण्य सदयः ।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ५॥

परंब्रह्मापीड्यः कुवलयदलोत्फुल्ल नयनो,
निवासी निलाद्रौ निहित चरणोऽ नन्तशिरसि ।
रसानन्दो राधा सरसवपुरालिंगनसुखो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ६॥

न वै प्रार्थ्यं राज्यं न च कनकमाणिक्य विभवं,
न याचेऽ हं रम्यां सकलजनकाम्यां वरवधूम ।
सदाकाले काले प्रमथपतिना गीत चरितो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ७॥

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते,
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते ।
अहो दीनानाथो निहितमचलं निश्चितपदं,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ८॥

श्री हनुमान चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ।
बरनउं रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन - कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहुं मोहिं, हरहु कलेश बिकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।।१।।
रामदुत अतुलित बल धामा, अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ।।२।।
महावीर बिक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी ।।३।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा, कानन कुंडल कुंचित केसा ।।४।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै, काँधे मूंज जनेऊ साजै ।।५।।
शंकर सुवन केसरी नंदन, तेज प्रताप महा जग वन्दन ।।६।।
विद्यावान गुनी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर ।।७।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया ।।८।।
सुक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा, विकट रुप धरि लंक जरावा ।।९।।
भीम रुप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र के काज संवारे ॥१०॥
लाय संजीवन लखन जिआये, श्री रघुबीर हरषि उप लाए ॥१०॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं, अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥१३॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नार सारद सहित अहीसा ॥१४॥
यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते, कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा, राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥
तुम्हरो मंत्र विभीषन माना, लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥१७॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लांघि गए अचरज नाहीं ॥१९॥
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥
राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥
सब सुख लहै तुम्हरी सरना, तुम रक्षक काहू को डरना ॥२२॥
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनो लोक हाँक ते काँपै ॥२३॥
भूत पिशाच निकल नहीं आवै, महावीर जब नाम सुनावैं ॥२४॥
नासै रोग हरे सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥२५॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥
सब पर राम तपस्वी राजा, तिन के काज सकल तुम साजा ॥२७॥
और मनोरथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै ॥२८॥
चारों युग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥
साधु सन्त के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे ॥३०॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥
तुम्हरे भजन राम को भावै, जनम जनम के दुःख बिसरावै ॥३३॥
अन्त काल रघुबर पुर जाई, जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ॥३४॥
और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेई सर्व सुध करई ॥३५॥
संकट हरै मिटे सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥३६॥
जै जै जै हनुमान गोसाई, कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥३७॥
जो सतबार पाठ कर कोई, छूटहिं बंदि महा सुख होई ॥३८॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा, होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥४०॥

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन, मगंल मूरति रुप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

શ્રી સાભ્રમતી (સાબરમતી) મૈયાની આરતી

જય સાભ્રમતી મૈયા માં જય સાભ્રમતી મૈયા
દીન દયાલી મૈયા (૨) તારા અમે છૈયા
માં જય સાભ્રમતી મૈયા

કશ્યપ ઋષિના તપથી પ્રગટી તુ માતા, મૈયા પ્રગટી તુ માતા
અર્બુદારણ્યમાં આવી (૨) તુ સાભ્રમતી માતા
માં જય સાભ્રમતી મૈયા

સર્વ દુઃખ હરણી અમૃત જલ ધારા, તારી અમૃત જલ ધારા
સૌની પ્યાસ બુઝાવે (૨) નિર્મલ જલ તમારા કિનારે
માં જય સાભ્રમતી મૈયા

તારા કિનારે દધીચિ તપ કરવા આવ્યા, મૈયા તપ કરવા આવ્યા
પાવન તટપર સપ્ત ઋષિએ (૨) આશ્રમ છે સ્થાપ્યા
માં જય સાભ્રમતી મૈયા

તારા પાવન કિનારે તીરથ ઘણા વસીયા, માં તીરથ ઘણા વસીયા
ઝાંખી તમારી કરતા (૨) ભવસાગર તરીયા
માં જય સાભ્રમતી મૈયા

વિશ્વપ્રસિદ્ધ જળયાત્રા સૌ જાણે, મૈયા દુનિયા સૌ જાણે
જગન્નાથના ચરણો (૨) પ્રેમે તુ પખાળે
માં જય સાભ્રમતી મૈયા

વૈભવ તારો જોવા આવે સૌ દોડી, મૈયા આવે સૌ દોડી
ચરણ કમલ તમારા (૨) વંદન કર જોડી
માં જય સાભ્રમતી મૈયા

કશ્યપી તુ ગંગા સૌના દુઃખ હરતી, માં સૌના દુઃખ હરતી
વૌઠા સંગમ થઈને (૨) સાગરમાં ભળતી
માં જય સાભ્રમતી મૈયા

કર્ણાવતીનું ગૌરવ, તમારા થકી ગાજે, મૈયા તમારા થકી ગાજે
તારી આરતી કરતા (૨) ભાન ભૂલી સૌ નાચે
માં જય સાભ્રમતી મૈયા

नंद घेर आनंद भयो,
जय कन्हैया लाल की...
हाथी घोड़ा पालखी,
जय कन्हैया लाल की...

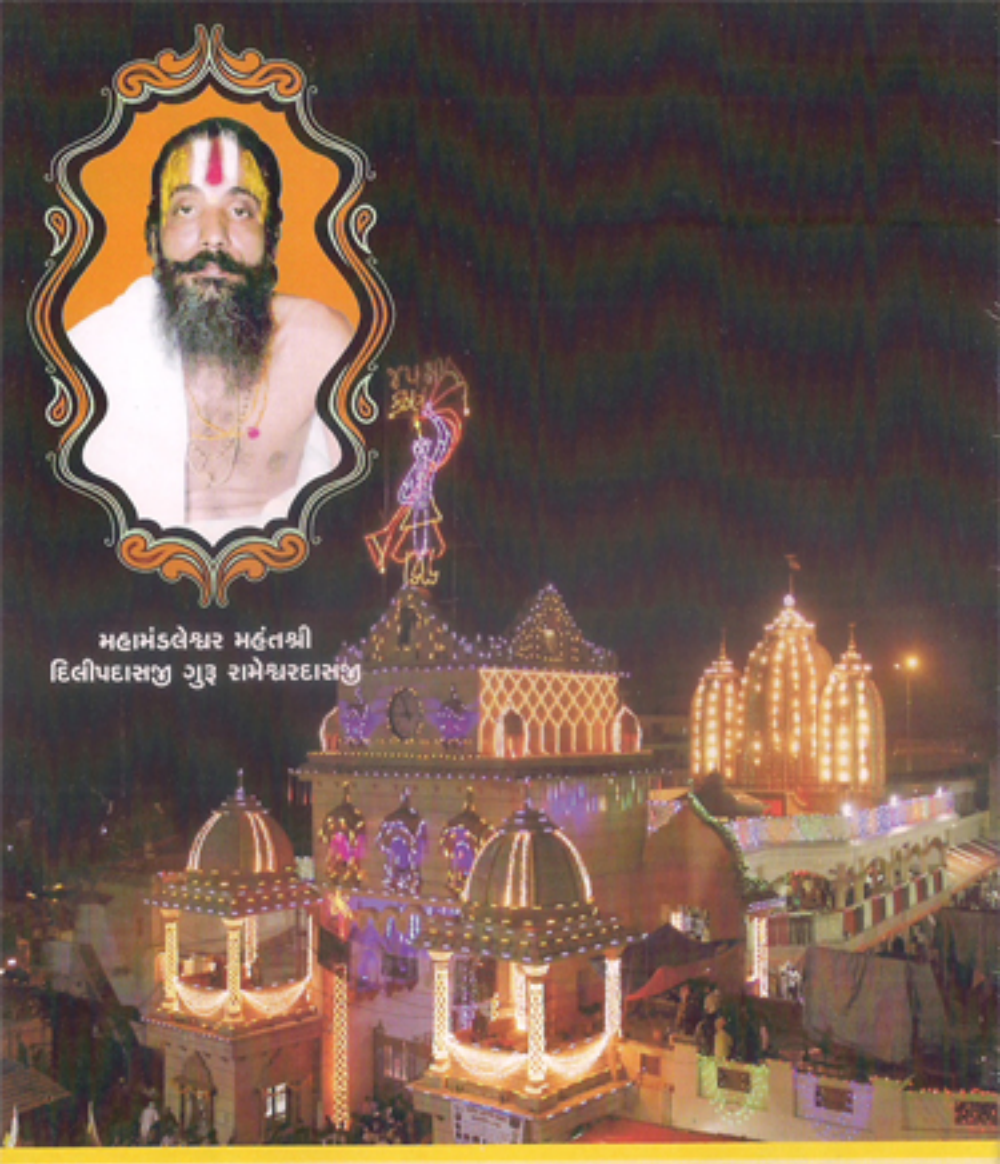

મહામંડલેશ્વર મહંતશ્રી
દિલીપદાસજી ગુરૂ રામેશ્વરદાસજી

श्री जगन्नाथजी मंदिर

जमालपुर दरवाजा के बहार, अहमदाबाद-३८० ०२२.

फोन : ०७९-२५३२४४२१ फेक्स : ०७९-२५३२३२२१

Website : www.jagannathjiahd.org | www.jagannathjigaushala.org | E-mail : jaganathjha@gmail.com

श्री नकलंग महादेव

गाँव : पालडी-कांकज, ता. दस्क्रोई, जि. अहमदाबाद.

मो. : ८३४७४१११४१, ९८२४०३६८९८

Prizam : 079-25451142, 25462088